लर्नियोसिस रोग

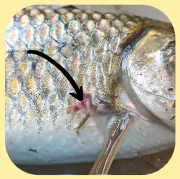

यह परजीवी लंगररूपी (धागे) आकार का त्वचीय सतह पर लटका हुआ दिखाई देता है जो त्वचा के अंदर प्रवेश कर गहरा घाव करता है।

उपचार :

- डिप्ट्रेक्स घोल- 1ग्राम प्रति 1000 ली0 की दर से 24 घंटे के लिए स्नान।
- 2-5% नमक घोल में 1 घंटे के लिए स्नान।
- चूना घोल- 150-200 कि0ग्रा0 प्रति एकड़ की दर से 15 दिनों पर 3 बार लागू करें।

परजीवी जनित रोगों से बचने के तरिके

- तालाब में रोगमुक्त मछली के बीजों का ही संचय करें।
- उपयुक्त घनत्व की जलकृषि करें।
- मछलियों को पोषक तत्व से भरपूर भोजन ही खिलायें।
- जरूरत से अधिक भोजन तालाब में ना डालें इससे पानी की गुणवत्ता बिगड़ जाती है।

मछली कीटाणुनाशक का प्रयोग

- चूना घोलः 10-15 कि0ग्रा0 प्रति एकड़ प्रति मीटर की दर से 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।
- साधरण नमक घोलः 40 कि0ग्रा0 प्रति एकड़ प्रति मीटर की दर से 2 माह मे एक बार प्रयोग करें।
- प्रोबायोटिक्स का प्रयोगः पानी की गुणवत्ता और मछलियों की रोग प्रतिरोधी क्षमता बढाए रखने के लिये।

मुख्य बिंदु

→ समय-समय पर पानी की गुणवत्ता की जांच करें।

→ नियमित रूप से मछली का स्वास्थ्य निरीक्षण करें और किसी भी समस्या के लिए स्वास्थ्य विशेषज्ञों से परामर्श करें।

आलेख

पुष्पा कुमारी,
सुदेष्ना सरकार एवं भारतेंदु विमल

प्रकाशक

डॉ. वी. पी. सैनी
आधिष्ठाता
मात्स्यिकी महाविद्यालय, किशनगंज
(बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें-

विभागाध्यक्ष
जलीय पशु स्वास्थ्य प्रबंधन विभाग
मात्स्यिकी महाविद्यालय, किशनगंज
आर्राबरी, किशनगंज-855107 (बिहार)
(बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना)
फोन नंबर –91 8969334613,
8789542899, 6290877738

डिजाइनिंग
तुषार कुमार
फोटोग्राफर, मात्स्यिकी महाविद्यालय, किशनगंज

मीठे पानी की मछलियों में परजीवी जनित रोग एवं उपचार

मात्स्यिकी महाविद्यालय, किशनगंज
(बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय)

परिचय

मीठे पानी की मत्स्य पालन में होने वाले रोगों में जीवाणु, परजीवी और फफूंद जनित संक्रमण प्रमुख हैं, जो ज्यादातर मछली की प्रजातियों को प्रभावित करते हैं। इनमें खासकर परजीवियों द्वारा संक्रमण भारी नुकसान पैदा करते हैं जो की हाल के दिनो में प्रमुख चिंता का कारण बनता जा रहा है। परजीवी- वे जीव जो अपने जीवन व्यापन (भोजन, आश्रय, वृद्धि, प्रजनन, व जीवन चक्र पूरा करने के लिए) दुसरे जीवों पर आश्रित होते हैं, परजीवी कहलाते हैं। मछलियों को प्रभावित करने वाले परजीवियों में इक, ट्राइकोडिना, डैक्टाइलोगाइरस (गिल फ्ल्यूक), आरगुलस एवं लरनिया आदि प्रमुख हैं।

परजीवियों से संक्रमण के प्रमुख कारण

- अत्यधिक घनत्व की मत्स्य पालन करना
- रोग से संक्रमित मछली के बीजों का तालाब में संचय करना
- तालाब में भारी मात्रा में गाद का जमना
- पानी की गुणवत्ता में अत्यधिक कमी होना
- पोषणयुक्त आहार की कमी आदि।

मछलियों में परजीवियों द्वारा होने वाले रोग एवं उपचार

सफेद धब्बों वाला रोग

इस रोग के संक्रमण मे मछलियों के पूरे शरीर, त्वचा, पंख एवं गलफड़ों पर सफेद धब्बे उभर आते हैं।

उपचार :

- लेटेक्स-मेयेर मिश्रण (मेलाकाइट ग्रीन (3.3 ग्राम)+फॉर्मेलिन (1 लीटर): 50 मि0ग्रा0 प्रति 3000 ली0 पानी में अधिकतम 3 बार हर 4-5 दिनों में दोहराना।
- फॉर्मलीन- 15 मि0ग्रा प्रति ली0 की दर से तालाब में उपयोग किया जा सकता है।
- 40 कि०ग्रा० प्रति एकड़ की दर से साधरण नमक का घोल बनाकर छिड़काव करें।

डैक्टाइलोगाइरस संक्रण

गिल फ्ल्यूक संक्रमण गलफड़ों में सूजन, सड़न, एवं स्वसनदर में परिवर्तन करता है, जो मछलियों के मौत का कारण बनता है।

उपचार :

- लेटेक्स-मेयेर मिश्रण 50 मि0ग्रा0 प्रति 3000 ली0 पानी में अधिकतम 3 बार हर 4-5 दिनों में दोहराना।
- फॉर्मलीन- 15 मि0ग्रा प्रति ली0 की दर से तालाब में उपयोग किया जा सकता है।
- 40 कि०ग्रा० प्रति एकड़ की दर से साधरण नमक का घोल बनाकर छिड़काव करें।

आरगुलोसिस रोग

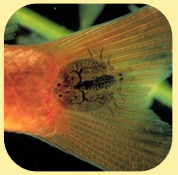

आरगुलस मछलियों के त्वचा, पंख पर जूं जैसे दिखाई देता है। ये परजीवी मछलियों के खून चूसते हैं जिससे बना घाव जीवाणु संक्रमण को बढावा देती है।

उपचार :

- आइवरमेक्टिन- 500 माइक्रोग्राम प्रति कि०ग्रा० शरीर के वजन की, एक खुराक भोजन माध्यम से प्रभावकारी है।
- आर्गक्योर - 40-60 मि0ग्रा0 प्रति एकड़ की दर, 7 दिनों के अंतराल पर 3 बार लागू करें।
- क्लीनर- 20-30 मि0ग्रा0 प्रति एकड़ की दर से तालाब में उपयोग करें।